आतंकवाद की पीड़ा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरूत्थान कार्यक्रम का उद्देश्य है नकारात्मक भावों के स्थान पर सकारात्मक भावों का विकास करना। आतंकवाद एक नकारात्मक भाव है। आतंकवाद का अर्थ है दूसरों को हिंसात्मक ढंग से भयभीत करना। व्यक्तियों के समूह या सार्वजनिक स्थान पर दशहत फैलाना आतंकवाद है। हिंसात्मक साधनों से सामूहिक नरसंहार करना, वर्ग विशेष के लोगों में दशहत फैलाना तथा हिंसात्मक साधनों के द्वारा व्यापक नरसंहार करना है। आतंकवाद के अनेक रूप हैं। अपहरण करना या करवाना, साम्प्रदायिक या धार्मिक उन्माद पैदा करके वर्ग विशेष में भय उत्पन्न करना आतंकवाद है। आतंकवाद के अनेक कारण है। कभी–कभी आर्थिक तंगी के कारण भी लोगों को बरगलाकर उनके दिमाग में घृणा का ऐसा ज्वार भर दिया जाता है कि वे आतंकवादी बन जाते हैं। कुछ ऐसे देश हैं और वहां कुछ ऐसी संस्थाएं है जहां पर आतंकवाद को संरक्षण दिया जाता है। ऐसी संस्थाएं आतंकवादियों को पाल पोशकर बड़ा करती है। ऐसे संगठन आतंकवादियों को प्रशिक्षित करके दूसरे देश में हिंसा फैलाते हैं। आतंकवादियों के दिमाग को इस तरह बना दिया जाता है कि उनके मन में हिंसा के अतिरिक्त कोई विचार आता ही नहीं। मरना और मारना उनके जीवन का लक्ष्य होता है। भारत का कश्मीर प्रान्त और उत्तर पूर्व के अनेक प्रान्त आतंकवादी कार्यवाही से ग्रस्त है। आतंकवाद आज पूरे विश्व के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है।

विश्व के अनेक देश इस समस्या से ग्रसित हो गये हैं। कहीं धर्म के नाम पर, कहीं सम्प्रदाय के नाम पर, कहीं देश के किसी हिस्से को तोड़ने के नाम पर, कहीं किसी देश की सम्प्रभुता को विखंडित करने के नाम पर, कहीं धर्म निरपेक्षता के नाम पर आतंकवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है। इस देश पर कई बार विदेशी आक्रमण हो चुके हैं। विदेशी आक्रांताओं से मुक्त होने के बाद इस देश को प्रजातंत्रात्मक धर्म निरपेक्ष समाजवादी गणराज्य के रूप में मान्यता दी गई। धर्म निरपेक्षता शब्द जोड़ने के पीछे भावना यह थी कि धर्म को केवल व्यक्ति तक सीमित रखा जाये। धर्म को किसी भी रूप में देश के

साथ न जोड़ा जाये। परन्तु हुआ इसके ठीक विपरीत। विगत वर्षों में धर्म निरपेक्षता की व्याख्या उसके वास्तविक उद्देश्य से हटकर की गई है। राजनीतिज्ञों ने इसे अपने स्वार्थ साधन का माध्यम बना लिया है। अल्पसंख्यकों के हितों की दुहाई देते हुए, जिस साम्प्रदायिक तुष्टीकरण की नीति को अपनाया गया है, उसके कारण धर्म निरपेक्षता को बहुत बड़ा धक्का लगा है। अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर जातिवाद, सम्प्रदायवाद, धर्मवाद को विकृत रूप में प्रस्तुत कर दिया गया। जिसकी अंतिम परिणति आतंकवाद के रूप में दिखाई दे रही है। भारत में चाहे कश्मीर समस्या हो, पंजाब समस्या रही हो, गोरखालैंड समस्या अथवा अन्य समस्याएं आतंकवाद का तांडव सर्वत्र दिखाई दिया है। कश्मीर में पाकिस्तान आयोजित आतंकवाद वहां के नवयुवकों को धर्म के नाम पर प्रेरित कर हिंसा कराता रहता है। आये दिन सुरक्षाकर्मियों और वहां के स्थानीय नागरिकों तथा दो चार आतंकवादियों की दुष्प्रेरणा से हत्याएं होती रहती है। सुरक्षाबल बहुत ही संयम पूर्वक काम करते है। भारतीय लोकतंत्र को साम्प्रदायिकता के हिसाब से मुक्त कराने के लिए बहुत प्रयास किये जा रहे हैं। भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों में व्याप्त सभी प्रकार के संदेह अविश्वास और अपने भविष्य के प्रति उत्पन्न आशंकाओं को समाप्त करने की दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं।

संवैधानिक व्यवस्थाओं और उदात्त घोषणाओं के बाद भी साम्प्रदायिकता एवं उससे उत्पन्न हिंसात्मक दंगों के प्रति देश में चिंता जताई जाती है। भारत के विभाजन के मूल में दो धर्मों की सांस्कृतिक पहचान का आग्रह था। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि सांस्कृतिक चिंताएं राजनीतिक शक्ति को अर्जित करने की चिंताएं बन गयी। इस प्रकार देश के विभाजन के बाद साम्प्रदायिकता राजनीतिक हथियार के रूप में देखी जाने लगी। जो लोग साम्प्रदायिकता को धार्मिक समस्या के रूप में लेते है वे यह भूल जाते है कि साम्प्रदायिकता की वैशाखी राजनीति है। इससे अधिक बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है कि भारत में वोट की राजनीति ने सत्ता प्राप्त करने के लिए सदैव साम्प्रदायिक शक्तियों का सहारा लिया है। वोट की राजनीति के कारण रिश्ते इतने विकृत हो गये है कि धर्म का अस्तित्व ही नहीं रहा है न राजनीति का धर्म है और न धर्म की राजनीति है। केवल सम्प्रदाय और कट्टर साम्प्रदायिक भावनाएं हमारी नियत बनकर रह गयी है। जब एक सम्प्रदाय सुनियोजित ढ़ंग से धार्मिक–सांस्कृतिक भेदों के आधार पर

राजनीतिक मांगे रखने का निर्णय करता है तब साम्प्रदायिक चेतना सम्प्रदायवाद के रूप में एक राजनीतिक सिद्धांत बन जाती है। सत्ता और साम्प्रदायिकता के इस अपवित्र गठबंधन में धर्म निरपेक्षता की जड़े खोखली कर दी है। भारत में प्रत्येक राजनीतिक आंदोलन और मोर्चे की शुरूआत शांति के नाम पर होती है और फिर हिंसा, अराजकता एवं आगजनी का सहारा लिया जाता है। न केवल राजनीति अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामान्यतः संयम, नियम, संतुलन और उन्मुक्त विचारों के समन्वय का मार्ग ग्रहण नहीं किया जाता।